महागुजरात गांधर्व संगीत समिति

गायन और वादन का अभ्यासक्रम

संगीत अलंकार (1) अलंकार (2) के विध्यार्थी को तैयार करने के बारे में गुरु, विध्यार्थी और परीक्षक के लिए ध्यान में रखने के योग्य बातें.

1) अलंकार 1 का विध्यार्धी 7 - 7 साल का संगीत का अभ्यास करके आया है वो ध्यान में रखकर अभ्यासक्रम बनाया है.
2) पिछले साल के रागों तथा तालो की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए और उस संदर्भ में प्रश्न पूछे जा सकते है.
3) गायन - वादन की प्रस्तुति ढंगदार होनी चाहिए. संगीत अलंकार 1 और 2 की परीक्षा उत्तीर्ण विध्यार्थी मंच प्रदर्शन के लिए सक्षम है और उसे आवश्यक समझा है.
4) गायन विषय में ख्याल गायन को मुख्य मानकर अलंकार 1 और 2 के अभ्यासक्रम के क्रमांक 4 & 5 में लिखे हुए 2 विषय - धमार और ध्रुपद गायन और उपशास्त्रीय गायन में से किसी भी एक विषय में विध्यार्थी को तैयारी करनी होगी. और 15 से 20 मिनिट की ढंगदार प्रस्तुति करने की क्षमता होनी चाहिए.
   ध्रुपद गायन में नोमतोम, उसकी बढ़त, गमक के प्रयोग, बंदिश प्रस्तुति में विविधता, विभिन्न लयकारी की प्रस्तुति और स्वर - श्रुति पर नियंत्रण के साथ प्रस्तुति करनी होगी.
5) उपशास्त्रीय गायन में ठुमरी दीपचंदी, जतताल या चाचर ताल में करनी है. उस की प्रस्तुति भावप्रधान होनी चाहिए. शब्द और साहित्य और उस में व्यक्त होते भाव - संवेदना के अनुरूप, बोल बनाव, स्वर काकु, राग काकु प्रयोग करने की क्षमता होनी चाहिए.
   दादरा, चैती, झूला इत्यादि शैली के बारे में विस्तृत जानकारी और किसी एक शैली की चीज की प्रस्तुति करनी होगी.

संगीत अलंकार (1) अलंकार (2) की परीक्षा के तीन भाग होंगे.

1) लेखित परीक्षा के लिए तीन घंटे का एक पेपर होगा जिस के 100 अंक होगे.
2) क्रियात्मक परीक्षा- दो भागो में होगी - (क) क्रियात्मक (ख) सभागायन.
3) क्रियात्मक परीक्षा ज्यादा से ज्यादा 2 घंटे की होगी. जिस में विध्यार्थी को अभ्यासक्रम में बताई गायकी के प्रकार में से परीक्षक की इच्छानुसार रागों की गायकी प्रस्तुत करनी होगी. और उसका पूर्ण परीक्षण होगा. विध्यार्थी को अभ्यासक्रम के रागों के बारे में विस्तृत और गहन अभ्यास करना होगा.
   सभागायन परीक्षार्थी को संगीत प्रेमी श्रोताजन के समक्ष करनी होगी, उसकी गायकी प्रस्तुत करनी होगों जिस के 100 अंक़ है.
   सभा गायन में परीक्षार्थी परीक्षक के पसंदीदा राग का ख्याल गायन 20 से 25 मिनिट प्रस्तुत करेगा. जिस के 50 अंक होगे.
   और ध्रुपद - धमार गायन या ठुमरी गायन की विशिष्ट शैली प्रस्तुत 15 मिनिट करनी होगी. जिस के 25 अंक होगे.
   उसके अलावा विध्यार्थी को क्रियात्मक परीक्षा के वक्त एक विषय दिया जाएगा जिस पर सभा गायन के वक्त 5 से 7 मिनिट का व्याख्यान देना होगा. **या** क्रियात्मक परीक्षा के वक्त एक बंदिश के शब्द दिये

जाएगे, परीक्षार्थी को उस बंदिश को योग्य राग और ताल में स्वरांकन कर के 5 मिनिट की प्रस्तुति करनी होगी. जिस के 25 अंक होगे. इस तरह उसकी सर्जनात्मक और तर्कशक्ति पहचान ने की कोशिष की जाएगी.

4) **<u>उपरोक्त सभी रागों की, सभी गायन शैली अर्थात ख्याल, धुपद-धमार, तराना, अल्प प्रचलित तालों की बंदिश, चैती, कजरी, झूला इत्यादि समान्यतः उपलब्ध है। फिर भी किसी विध्यार्थी या गुरुवर्य को, रागांग या बन्दिशों की जरूरत है तो " प्रणव पारिजात ट्रस्ट" को संपर्क कर सकते है और प्राप्त कर सकते है.</u>**

5) रागों के स्वर विस्तार और बन्दिशों का विध्यार्थी को बार बार रियाज़ करना जरूरी है. तभी स्वरस्थान ठीक तरह कंठ में से निकलेगे और प्रस्तुति में सौन्दर्य - रस भाव एवम सरलता अपनेआप आ जाएगी. विध्यार्थी यह अभ्यास अपने गुरु के सन्मुख करे वही उचित है जिस से आवाज की विकृति, रागांगदोष इत्यादि दूर हो जाए और प्रस्तुति प्रभावशाली बनेगी.

6) अलंकार की पदवी विध्यार्थी को एक अच्छा शिक्षक बने उस तरह उसे तैयार करना होगा.

7) विध्यार्थी की प्रस्तुति मौलिक रहे नहीं के रटा हुआ प्रस्तुतीकरण हो. अंगुली से गिन कर, रटा हुआ या बंधा हुई प्रस्तुति स्वीकार्य नहीं है.

8) राग - रस और बंदिश के भाव समज कर की गई प्रस्तुति को महत्व दिया जाएगा. विध्यार्थी से सहज रूप से निकलती तानें, रागांग की स्पष्ट समज और मौलिक गायन की अपेक्षा रखी है.

9) अलंकार 1 और 2 का उत्तरणीय विध्यार्थी ऑल इंडिया रेडियो की स्वर परीक्षा के लिए सुयोग्य बने उसका ख्याल रखा है.